गुठली फिर आम बन गई

चित्र व कहानी : कनक

गुठली सबका कहना मानती है। उससे जो भी काम कहो फटाफट कर देती है। खाने में कभी आनाकानी नहीं करती। सब माँएँ अपने बच्चों को गुठली की तरह बनने की सलाह देती हैं।

गुठली कुछ दिनों के लिए अपने ताऊ जी के घर आई है। यहाँ उसके तीन भाई और एक बहन है। गुठली सबसे छोटी है। कोई उसे घुमाने ले जाता है। कोई उसे नई-नई चीज़ें लाकर देता है। बहन उसके हाथों में मेहन्दी लगाती, तो गुठली बहन के लम्बे बालों को नए-नए तरीकों से बनाती है। दोपहर को जब सब सो जाते हैं तो गुठली बगीचे में घूमती है। कभी मोगरे के फूल चुनती, कभी कच्चे आम, कभी खजूर, कुल मिलाकर गुठली खूब मज़े कर रही है।

आज घर में भरवाँ करेले बन रहे हैं। गुठली को बहुत पसन्द हैं। पर ताई जी छोटी कढाई में आलू-प्याज़ की सब्ज़ी भी बना रही हैं। गुठली खुश है। आज तो दावत है और गुठली उसके लिए तैयार है। खाते समय थाली में सिर्फ करेला देख गुठली पूछती है, "अरे, मुझे आलू की सब्ज़ी तो आप परोसना ही भूल गईं।" ताई जी ने बताया कि वह सब्ज़ी तो बड़े भैया के लिए है। क्योंकि वे करेला नहीं खाते। गुठली को अटपटा तो लगा पर उसने ज़्यादा सवाल नहीं किए।

दो दिन बाद ताई जी कद्दू की सब्ज़ी बना रही थीं। उस दिन थोड़ी-सी भिंडी की सब्ज़ी भी बनी। गुठली ने पूछा, "कौन कद्दू नहीं खाता?" पता चला कि ताऊ जी और छोटे भैया कद्दू नहीं खाते। इस बार यह बात गुठली के मन में अटक जाती है। वो ताई जी से पूछती है कि वो क्या-क्या नहीं खातीं। ताई जी हँसकर कहती हैं कि वो सब खाती हैं। यही जवाब दीदी ने दिया। यानी जो सब कुछ खा लेते हैं उनके लिए कुछ खास नहीं बनता। जो नखरे करते हैं वो खास हो जाते हैं। गुठली को यह बात जँच गई। अब वो भी खास बनना चाहती थी। अगले ही दिन उसने सबको बताना शुरु कर दिया कि वह बैंगन नहीं खाती (हालाँकि बैंगन उसे बहुत पसन्द हैं)। पर, आज शाम को बैंगन बन रहा है। गुठली बहुत उत्सुक है। आज उसके लिए कुछ खास बनेगा। वह बहुत देर तक चौके में मँडराती है और फिर बगीचे में खेलने चली जाती है। शाम को खाने में गुठली को बैंगन परोस दिए गए। गुठली ने सोचा कि शायद ताई जी भूल गई होगी। गुठली ने याद दिलाया..."ताई जी, मैं बैंगन नहीं खाती।" उसे लगा अब ताई जी उसकी खास सब्ज़ी लाएँगी। और गुठली भी खास बन जाएगी। पर, ऐसा नहीं हुआ। ताई जी उसकी तरफ देख के मुस्कुराई और चौके में चली गईं। गुठली ने भी हार नहीं मानी। उसने फिर ताई जी से वही बात पूछी। इस बार ताई जी आईं और उसकी थाली से बैंगन चुनकर ले गईं। अपने लिए कुछ भी खास न बना देख उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े। यह देख ताऊ जी, ताई जी पर बरस पड़े, "जब छोरी ने बता दिया था, तो उसके लिए कुछ और नहीं बना सकती थी..." और बहुत कुछ सुनाया ताई जी को। ताई जी की आँखें भर आईं। सब भाई और दीदी उसे ही देख रहे थे। गुठली भी अपने आपको ही अपराधी महसूस कर रही थी। खास बनने के चक्कर में इतनी बड़ी आफत खड़ी कर ली। उसका मन कर रहा था कि वो चिल्लाकर सबको कह दे कि वह सब खाती है। पर, हिम्मत नहीं हुई। वह चुपचाप छत के कोने में जाके बैठ गई। थोड़ी देर बाद ताई जी से पैसे लेकर छोटे भैया उसे इडली-दोसा खिलाने ले गए। गुठली खास बन गई थी पर वो खुश नहीं थी। उसे बहुत अकेला-अकेला लग रहा था। घर जाते ही वह ताई जी के गले लग गई। ताई जी ने भी उसे सीने से चिपका लिया। बड़ी देर तक दोनों बिना कुछ बोले गले लगे रहे।

अगले दिन गुठली फिर से आम बन गई।